वर्षा का पानी छाया, घर–घर पल्ली लगाया

टोला– जंगीयादव का टोला

पंचायत– श्यामपुर कोतराहां

प्रखण्ड– नौतन,

जिला– पश्चिम चम्पारण (बिहार)

बाढ. की स्थिति

भारत के उत्तर में हिमालय पर्वत है जिसके शिवालिक पहाडी से गंडक नदी निकलती है। गंडक नदी नेपाल से होती हुई बिहार के बाल्मिकीनगर में प्रवेश करके उत्तरप्रदेश राज्य की सीमा होती हुई पुन: पश्चिम चम्पारण जिले के पश्चिम किनारे से होती हुई हाजिपुर के सोनपुर जाकर गंगा नदी में विलिन हो जाती है। गंडक नदी को पश्चिम चम्पारण का शोक कहा जाता है। यह नदी वर्षा के मौसम में बाढ की विभिषिका लाती है । गांव के गांव कटते जाते हैं। लोग विस्थापित हो जाते हैं। फसलें बर्बद होती जाती है। पलायन की समस्या बढ.ती जाती है। स्वच्छ पानी पीने को नही मिलता है। चापाकल डुब जाते हैं। कुंआ बंद हैं। बाढ में फंसे लोग मजबूर होते हैं बाढ के गंदे एंव दूषित पानी पीने को।

टोले का इतिहास

गंडक नदी के किनारे बसा हुआ एक गांव है श्यामपुर कोतराहां। 200 वर्ष पूर्व नदी की कटाव से भाग कर 10–12 परिवार ने एक टोला बसाया, जिसका नाम हुआ जंगी यादव का टोला। जंगी यादव के पूर्वज अपने साथ बीन, मलाह, बढई एवं यादव के साथ इस टोले में रहना शुरू किया। जब जंगी यादव बुद्धीजीवि एवं सामाजिक व्यक्ति के रूप में पहचान बना लिए तब टोला का नाम भी उनके नाम से जाना जाने लगा। इस टोले में आज 49 परिवार के 368 लोग रहते है जिसमें 167 महिला तथा 201 पुरूष हैं। यहॉ पर यादव (पि0जा0)-23, बढई(अ.पि.जा.)-03, मलाह(अ.पि.जा.)-01, धानुख (अ.पि.जा.)-06, बीन(अ.पि.जा.)-11, तेली(पि.जा.)-01, दुसाध (अनुसूचित जाति)-04 परिवार के लोग एक साथ आपसी भाईचारे के बीच रहते हैं।

रोज की जिन्दगी

जंगीयादव टोला के अधिकांश परिवार के लोग अपना डेरा (ठहराव स्थल) नदी के किनारे एक–एक झोपडी बनाकर रखे हुए हैं। यहॉ से खेतों के तैयार फसल को इक्कठा कर घर लाते हैं।यहॉ पशुओं को भी पालते हैं। इसकी देखभाल में परिवार के बुर्जूग होते हैं। डेरा पर से प्रतिदिन लोग शाम में आते हैं तथा सुबह में फिर डेरा पर चलू जाते है। इस टोले में 3 पक्के का छतदार मकान है तथा एस्बेस्टस के छत वाला पक्के का 6 मकान है । शेष 40 परिवार में फूस का झोपडी है। सभी घर उॅचा टीला बनाकर बनाया गया है। फिर भी बाढ में 3–5 फीट पानी घर में प्रवेश कर जाता है। इस छोटे टोले में 2 कुंआ है, एक घनीलाल यादव के दरवाजे चौराहे पर तथा दूसरा

जंगबहादूर यादव के दरवाजे पर। लगातार बाढ ने कुंए को क्षतिग्रस्त एवं पानी को दूषित कर दिया है। धनीलाल यादव के दरवाजे पर वाला कुंआ 4 बार उडाही–सफाई हुआ लेकिन मरम्मति के अभाव में बंद है तथा दूसरा कुंआ कचरा से भरा हुआ है।

दूषित पेयजल का कुप्रभाव

टोले में 50 नीजी तथा 1 सरकारी चापाकल पेयजल का मुख्य साधन है। सरकारी चापाकल की गहराई 70 फीट है तथा नीजी चापाकलों की गहराई 20–25 फीट है। बाढ के समय घर के किनारे वाले चापाकल डूब जाते हैं तथा दरवाजे का चापाकल जो उॅचा स्थल पर है जो आंशिक डूबता है। बाढ के समय लोग चापाकल से बाढ के गंदे पानी को पीते हैं। घर एंव चापाकल बाढ के पानी से घिरा हुआ होता है । जिससे लोगों को पेट दर्द, गैस्टिक, कैदस्त डायरिया, कलरा, बुखार, सर्दी खॉसी व अन्य जल जनित बिमारियां होती रहती है। जिसका कुप्रभाव सालोभर सहन करने पर लोग मजबूर हैं। यहॉ पर 90 लोगों को पेट में गैस्टिक एवं 60 महिलाओं को ल्यूकोरिया (गर्भाशय का संक्रमित रोग) है। लोगों का यह अवधारणा है कि दुषित पानी पिने से महिलाओं में यह बिमारी होती है।

स्वच्छ पानी पर एक सोच

स्वच्छ पानी पर जब गांव में चर्चा प्रारम्भ किया गया तब लोगों का घ्यान पानी के मुदुदे पर आना शुरू हुआ। अमरूद के पत्ता से चापाकल एवं कुंए के पानी की जॉच हुई तो जिस शीशे के ग्लास में कुंआ का पानी था वह साफ रह गया लेकिन जिस ग्लास में चापाकल का पानी था उसका रंग बैगनी हो गया। जो पानी का बैगनी रंग आयरन युक्त पानी का संकेत देता है । इस तरह देखने से चापाकल के चबुतरा पर तथा पानी के बरतन में पिलापन का आना एक आयरनयुक्त पानी का सबुत दिखता है । इस तरह आयरनयुक्त चापाकल के पानी से लोगों में एक डर आया। बरसात के समय वर्षा के पानी का उपयोग करने तथा बरसात के बाद कुंआ के पानी का उपयोग करने पर सभी लोगों में एक समझ व सोच बनने लगी।

वर्षा जल संग्रहण

परिणामत: इस टोले के 49 परिवार में से 44 परिवार के लोगों ने 2800 लीटर वर्षा के पानी को इक्ठा करके पीया है। इसके लिए धनी– लाल यादव के दरवाजे पर लगाया गया सार्वजनिक पल्ली (पोलिथिन शीट)से 2 परिवार, व्यक्तिगत पल्ली से 41 परिवार तथा अगल– बगल के व्यक्तिगत पली से 2 परिवार ने वर्षा जल का संग्रहण किया तथा पीया है। प्रत्येक परिवार ने 60–70 लीटर पानी इक्ठा किया है। इस टोले में 5 परिवार ऐसा था जिसने बिल्कुल न वर्षा पानी पीया और न पल्ली ही लगाया।

वर्षाजल संग्रहण प्रक्रिया व प्रभाव

इस टोले में, जून से जूलाई तक लगातार वर्षा के पानी पर बातें मेघ पईन अभियान के साथियो के द्वारा होती रही, लेकिन लोंगों ने उस समय इस बात को समझा जब सार्वजनिक पल्ली से लोगों ने पानी रोक कर पीया। इस वर्षा

25 जूलाई से वर्षा हुई तथा 10 अगस्त से 15 अगस्त तक लोगों ने व्यक्तिगत स्तर पर 41 पल्ली लगई। पूरे वर्षा का 10–15 दिवस ही लोगों ने पानी को पकड सका तथा पीने में उपयोग किया । व्यक्तिगत पल्ली खरीदने के लिए गांव वाले एक साथ 20–20 रूपया मदन यादव स्थानिय शिक्षक के पास जमा किया तथा पल्ली खरीदने के बाद सबको वितरित कर दिया गया। व्यक्तिगत स्तर पर एक –एक मीटर का पल्ली था। पल्ली को लोगों ने दरवाजे पर, आंगन में तथा बैलगाडी के गाडी पर बीच में लगया गया था। 4 व्यक्ति अपने –अपने घर पर 5–5 लीटर का मटका खरीद कर पानी जमा करते थे जिसमें मोतिराम मुखिया, शंभु मुखिया, परमा मुखिया एवं मुनी मुखिया हैं। बाकी परिवारवाले बाल्टी एवं कठरा में पानी रोककर रखते हैं । लक्षमण पासवान एक ऐसे व्यक्ति हैं जो बोतल में पानी रखे हुए हैं तथा वर्षा के पानी से खाना भी बनाये हुए हैं । रामदयाल साह, बीरबल मुखिया, रामचन्द्र महतो , मंगल मुखिया एवं दुखी पासवान जैसे 5 परिवार के लोगों ने तो वर्षा का पानी बिल्कूल ही नहीं पीया। इसलिए कि वे वर्षा के पानी को पीना बेकार की बातें समझते हैं। जिन परिवार के लोगों ने वर्षा का पानी पीया है उसने बताया है कि वर्षा के पानी पीने से पेट में ठंडा रहता है, भूख खूब लगता है तथा पेट का
गैस्टीक आराम है।